Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 5, Issue 2 – 2020
ISSN: 2581-3501

बिहार में उच्च शिक्षा, चुनौतियाँ और समाधान

राज रानी

मानव समाज का इतिहास असभ्य से सभ्य बनने का इतिहास है और इसकी प्रक्रिया में हजारों साल लगे। मानव सभ्यता के आरंभिक दौर में मनुष्य एक पशु के समान ही था। उसका लक्ष्य था सिर्फ़ भोजन की तलाश करना। समय-दर-समय मनुष्यों ने खुद को निखारा और स्वयं को आदिमानव से महामानव मनाया। निरंतर सीखने की ललक और चिंतन करने के कारण ही मनुष्य खुद को पशुओं से अलग कर पाया। मनुष्य ने इसके लिए हथियार बनाया शिक्षा को। शिक्षा के बदौलत मानव समाज ने अपनी काया ही बदल डाली।

शिक्षा **'शिक्ष'** धातु से बनी है। इसका अर्थ होता है- सीखना, विद्या प्राप्त करना आदि। शिक्षा का मतलब ज्ञान के समग्र रूप से है। वैदिक काल में शिक्षा का चरित्र अत्यंत व्यापक था। उस समय मनुष्य जीवन को अच्छे से संचालित करने के लिए जिन-जिन उपागमों की ज़रूरत पड़ती थी, उन सभी को शिक्षा के दायरे में रखा जाता था और उसे सिखाया जाता था। उस दौर में मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास, नैतिकता और आदर्श आचरण शिक्षा का उद्देश्य था।

हमें शिक्षा का संकीर्ण रूप मध्यकाल में ही देखने को मिलता है। इस काल में शिक्षा धर्म से आक्रांत हो गया। ज्ञान का कोई धर्म, रंग या देश नहीं होता, वह जल और वायु की तरह स्वच्छंद होता है। इस पर किसी का भी वश नहीं। ज्ञान को किसी भी सीमा के तहत बांधा नहीं जा सकता।

आधुनिक काल में शिक्षा का चरित्र रोजगारोन्मुख हुआ। इसके साथ ही, इस दौर में शिक्षा के साथ वैज्ञानिकता और तार्किकता जुड़ी। आधुनिक काल में शिक्षा के केंद्र में व्यक्ति आया। इसके साथ ही आधुनिक काल में शिक्षा का चरित्र वस्तुवादी हो गया। इस काल में जुड़े शिक्षा के नए चरित्रों ने अभिशाप और वरदान दोनों का काम किया। यह एक भिन्न विश्लेषण का विषय है। अतः इसकी चर्चा को यहीं छोड़ना उचित रहेगा।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

गौरतलब है कि बिहार ऐतिहासिक रूप से एक प्रख्यात प्रदेश रहा है। भारतीय समाज के हर व्यापक परिवर्तन का यह प्रदेश साक्षी रहा। दर्शन से लेकर राजनीति के क्षेत्र में बिहार की धरती ने पथप्रदर्शक का काम किया।

बिहार में उच्च शिक्षा की स्थिति और यथास्थिति पर बात करने से पहले अतीत में बिहार की शिक्षा-परंपरा पर थोड़ा प्रकाश डालना समीचिन होगा। साथ ही साथ अतीत में बिहार की शिक्षा का राष्ट्र और विश्व के ऊपर प्रभाव को रेखांकित करना भी आवश्यक होगा, क्योंकि किसी भी समय का समग्र और वस्तुपरक मूल्यांकन परंपरा के आलोक में ही किया जा सकता है।

प्राचीन काल में बिहार शिक्षा और ज्ञान का गढ़ था। पूरे एशिया सहित अन्य कई देशों को बिहार की भूमि से निकले ज्ञान के प्रकाशपुंज ने उच्छवासित किया। बिहार के **नालंदा** और **विक्रमशिला विश्वविद्यालय** शिक्षा और ज्ञान के ऐसे केंद्र बनकर उभरे जिनकी चर्चा दूर-दूर तक होती थी। **नालंदा विश्वविद्यालय** की स्थापना **गुप्त वंश** के राजा **'कुमारगुप्त'** प्रथम ने किया। यह आज के बिहार के नालंदा जिले में स्थापित था। ज्ञान और विचार के मामले में यह एक उत्कृष्ट केंद्र था। यहाँ एशिया के कई देशों से लोग शिक्षा ग्रहण करने आते थे। यहाँ की नामांकन-प्रक्रिया आसान न थी। इस केंद्र में प्रवेश पा लेने वाला स्वयं को गौरवशाली समझता था। साधन-संसाधन के मुकाबले में यह विश्वविद्यालय धनी था। इसका कारण यह है कि यह बौद्ध धर्म की शिक्षा का केंद्र था। बौद्ध धर्म को मानने वाले कई राजाओं का संरक्षण इसे मिला। इस केंद्र के विस्तार के लिए कई प्रकार की राजकीय सहायता प्रदान की गयी। बौद्ध धर्म के अनुयायियों की तरफ से इसे लगातार प्रोत्साहन मिलता रहा। ऐसा कहा जाता है कि नालंदा विश्वविद्यालय का पुस्तकालय सात मंजिला था। चीनी यात्री **'ह्वेनसांग'** ने इस विश्वविद्यालय के बारे में कई महत्वपूर्ण तथ्य अपने संस्मरण में उल्लेखित किए हैं। नालंदा विश्वविद्यालय की विशेषताओं के बारे में **'ओम प्रकाश प्रसाद'** अपनी पुस्तक **'बिहार: एक ऐतिहासिक अध्ययन'** में लिखते हैं- **"637 ईस्वी में जब ह्वेनसांग यहाँ आए थे तब यह विश्वविद्यालय अपने चरमोत्कर्ष पर था। इस समय यहाँ दस हजार विद्यार्थी तथा एक हजार आचार्य थे। विद्यार्थियों का प्रवेश नालंदा विश्वविद्यालय में काफी कठिनाई से होता था, क्योंकि केवल उच्चकोटि के विद्यार्थियों को ही प्रविष्ट किया जाता था।"[1]**

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

लोकमानस में ऐसा व्याप्त है कि **'बख्तियार खिलजी'** ने इस विश्वविद्यालय को **12वीं शताब्दी** में जला दिया था। पर, इस बात के अभी तक कोई पुख्ता प्रमाण नहीं मिल पाए हैं। खैर, जो भी हो, यह विश्वविद्यालय जब तक रहा ज्ञान की आभा पूरे विश्व भर में बिखेरता रहा। भारतीय-शिक्षा-परंपरा में नालंदा विश्वविद्यालय आज भी एक स्मरणीय पक्ष के रूप में मौजूद है। अगर यह विश्वविद्यालय आज होता तो शिक्षा और मानव समाज का स्वरूप कुछ और ही होता।

भारतीय शिक्षा परंपरा में 'विक्रमशिला विश्वविद्यालय' भी अपने समय में अग्रणी रहा। इसकी स्थापना **पालनरेश (752 से 794 ईसवी)** ने की थी। इस विश्वविद्यालय में तंत्रशास्त्र, बौद्ध दर्शन, दर्शन शास्त्र, व्याकरण ,तत्व मीमांसा, चिकित्सा विद्या और शिल्प विद्या की शिक्षा दी जाती थी। यह आज के भागलपुर जिले में गंगा के तट पर बसा हुआ था।

इस प्रकार हमने बिहार के अतीत में जाकर शिक्षा और उच्च शिक्षा की यथास्थिति को समझा। इस बात में कोई दो राय नहीं कि **'नालंदा विश्वविद्यालय'** और **'विक्रमशिला विश्वविद्यालय'** का दौर बिहार ही नहीं बल्कि संपूर्ण भारतवर्ष के लिए शिक्षा और ज्ञान का स्वर्णयुग था। इसके बाद शिक्षा और शिक्षण संस्थानों का जो अवसान हुआ, वह आज तक जारी है।

आधुनिक बिहार में शिक्षा का केंद्र पटना हुआ। अंग्रेजी सरकार के माध्यम से उच्च शिक्षा के कई संस्थान खोले गए। अंग्रेजों के आगमन से पहले भी शिक्षा के कुछेक केंद्र पटना में खोले गए थे। इस संदर्भ में **'ओम प्रकाश प्रसाद'** लिखते हैं- **"नालंदा विश्वविद्यालय और विक्रमशिला विश्वविद्यालय के बाद विशेषकर पटना में अरबी-फारसी, उर्दू और हिंदी-संस्कृत से संबद्ध शिक्षा केंद्रों की स्थापना का सिलसिला अंग्रेजी शासनकाल से पूर्व जारी हो चुका था।"[2]**

आधुनिक बिहार में **'पटना कॉलेज' (पटना विश्वविद्यालय)** आधुनिक शिक्षा का केंद्र बना। इस विश्वविद्यालय ने भी उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त की। आधुनिक बिहार के निर्माण और इसकी संरचना में इस विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, लेकिन समय की गति के साथ-साथ इस संस्थान का भी अवसान ऐसा आया कि इसे देखकर हर किसी को तरस ही आता है।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 5, Issue 2 – 2020
ISSN: 2581-3501

वर्तमान समय में बिहार की उच्च शिक्षा व्यवस्था पर कुछ भी लिखने या बोलने से पहले मानस में यह सवाल आता है कि इसके लिए न जाने कितने पर्दों को हटाना होगा। जब हम प्राचीन बिहार के नालंदा विश्वविद्यालय और विक्रमशिला विश्वविद्यालय के दौर को देखते हैं तो फिर आज के बिहार की शिक्षा व्यवस्था पर मन में गहरा अवसाद उत्पन्न होता है। आधुनिक बिहार में जिस पटना विश्वविद्यालय ने उच्च शिक्षा को बिहार में फिर से जीवित करने का काम किया; आज वही विश्वविद्यालय दयनीय दौर से गुजर रहा है। यह संस्थान शिक्षक, शिक्षकेत्तर कर्मियों और अन्य सुविधाओं की कमी से दशकों से जूझ रहा है। पटना विश्वविद्यालय के लिए कई सालों से केंद्रीय विश्वविद्यालय के दर्जे की मांग की जा रही है। कई राजनीतिक पार्टियों ने एक-आध बार इसे चुनावी मुद्दा भी बनाया, पर यह माँग अभी तक एक माँग बनकर ही स्थिर पड़ी हुई है। पिछले साल 2019 में पटना विश्वविद्यालय का शताब्दी वर्ष मनाया गया। भारत के माननीय प्रधानमंत्री **'श्री नरेंद्र मोदी'** इस अवसर पर पटना विश्वविद्यालय के प्रांगन में आये। बिहार के मुख्यमंत्री **'श्री नितीश कुमार'** ने इस विश्वविद्यालय को केंद्रीय विश्वविद्यालय बनाने की गुहार लगाई, पर यह माँग अभी तक पूरी नहीं हो पाई है। नैक की टीम ने पिछले साल पटना विश्वविद्यालय को **'बी+'** की ग्रेडिंग दी जो कहीं से भी संतोषजनक नहीं है।

यहाँ लंबे वक्त से शिक्षक-भर्ती की माँग की जा रही है। पर, इस प्रक्रिया को अभी तक पूरा नहीं किया गया है। पटना विश्वविद्यालय बिहार का अग्रणी संस्थान है। बिहार में स्थित अन्य राज्य विश्वविद्यालयों की तुलना में यही एक विश्वविद्यालय है जिसका शैक्षणिक-सत्र समय पर शुरू और खत्म होता है। यहाँ डिग्री के लिए विद्यार्थियों को सालों-साल इंतजार नहीं करना पड़ता। पटना विश्वविद्यालय को फिर से शिक्षा के एक बेहतरीन मॉडल के रूप में खड़ा किया जा सकता है, बशर्ते सरकार इसके लिए सक्रिय और संजीदा हो।

बिहार में शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर जब भी बात की जाती है तो पटना विश्वविद्यालय और इसके अब तक न मिलने वाले 'केंद्रीय विश्वविद्यालय' के दर्जे की बात की जाती है। जबकि ऐसे कई सारे राज्य हैं, जहाँ के राज्य विश्वविद्यालय लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। वहाँ का इंफ्रास्ट्रक्चर सही है। नैक के द्वारा हर बार उन्हें अच्छी ग्रेडिंग दी जाती है। उदाहरण के तौर पर हम यहाँ 'तमिलनाडु' और 'पश्चिम बंगाल' को देख सकते हैं। तमिलनाडु में राज्य विश्वविद्यालय की कुल संख्या 22 है, जिनमें अधिकांश विश्वविद्यालय को नैक के

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

द्वारा **'A+'** या **'A'** की ग्रेडिंग मिली है और यहाँ के कई राज्य विश्वविद्यालय **एनआईआरएफ-2020** के द्वारा जारी की गई रैंकिंग में टॉप 100 में स्थान पाए हुए हैं। इसी प्रकार अगर हम पश्चिम बंगाल की बात करें तो यहाँ राज्य विश्वविद्यालयों की कुल संख्या 27 है। इनमें से कई ऐसे विश्वविद्यालय हैं जिन्हें नैक की तरफ से **'A'**या **'A+'**की ग्रेडिंग दी गई है। जबकि बिहार के अधिकांश राज्य विश्वविद्यालय को नैक के द्वारा **'B'**या **'B+'**की ग्रेडिंग ही दी गई है। इन आंकड़ों से यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि बिहार में उच्च शिक्षा के जो संस्थान हैं, उनमें सुधार की कितनी ज़रूरत है। एनआईआरएफ-2020 के द्वारा जारी की गई रैंकिंग में बिहार का एक भी राज्य विश्वविद्यालय और केंद्रीय विश्वविद्यालय टॉप 100 में नहीं है। बिहार की सरकारों द्वारा हमेशा केंद्रीय विश्वविद्यालयों की कमी का रोना यहीं झूठा साबित होता है। अगर केंद्रीय विश्वविद्यालय की संख्या की ही बात करें तो इस मामले में **उत्तर प्रदेश (6)**, **नई दिल्ली (5)** के बाद **बिहार (4)** का स्थान तीसरे पायदान पर आता है। यह अपने आप में एक रोचक तथ्य है।

उपर्युक्त, ये तमाम आंकड़े दिखाते हैं कि बिहार की सरकारें उच्च शिक्षा को लेकर संजीदा और सक्रिय नहीं हैं। अगर राज्य में उच्च शिक्षा की बेहतरी को लेकर सरकार संजीदा होती तो आज स्थिति इतनी दारुण और भयावह नहीं होती। बिहार के कई ऐसे राज्य विश्वविद्यालय है, जो शैक्षणिक सत्र में लेट-लतीफी के लिए मशहूर हैं। इन विश्वविद्यालयों में 3 साल की डिग्री लेने में विद्यार्थियों को 5 से 8 साल तक का इंतजार करना पड़ता है। यहाँ के लगभग हर राज्य विश्वविद्यालय में इसी प्रकार की अराजकता की स्थिति कई दशकों से बनी हुई है। राज्य के विश्वविद्यालयों के कॉलेजों में कई ऐसे विभाग हैं, जहाँ एक भी शिक्षक नहीं हैं। बिहार का अग्रणी विश्वविद्यालय 'पटना विश्वविद्यालय' भी इस मामले में अछूता नहीं है। इस विश्वविद्यालय के कई विभागों को सालों से एक या दो शिक्षक चला रहे हैं। लैब और प्रयोगशालाओं में सामग्रियाँ पूरी तरह से बर्बाद हो गई हैं।

ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन (AISHE) 2018-19 के सर्वे की बात करें तो भारत की **ग्रोस इनरोलमेंट रेशियो (GER) 26.4%** है, जबकि बिहार के उच्च शिक्षण संस्थानों में **जीईआर (GER) 13.6%** है, जोकि भारत के दो-तीन राज्यों को छोड़कर सबसे निचले पायदान पर है। इस संदर्भ में भारत के अन्य राज्यों की बात करें तो GER का यह आंकड़ा

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

कुछ इस प्रकार है- **"सिक्किम 53.9%, चंडीगढ़ 50.6%, तमिलनाडु 49%, केरल 37%, तेलंगाना 36.2%, आंध्र प्रदेश 32.4% और महाराष्ट्र 32%।"[6]**

बिहार के उच्च शिक्षण संस्थानों की बात करें तो मई 2015 में आई बिहार में उच्च शिक्षा को लेकर **वर्ल्ड बैंक** की रिपोर्ट के अनुसार- **"बिहार के 21% संस्थानों में लैब की सुविधा नहीं है। 44% कॉलेज और 20% विश्वविद्यालयों में कंप्यूटर- सेंटर नहीं हैं।[7] इसी प्रकार वेतन की बात करें तो 2010-11 में बिहार वेतन पर 77% खर्च कर रहा था, जबकि मध्यप्रदेश का आंकड़ा इस मामले में 90% था।"[8]**

ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन (AISHE) 2010-11 की बात करें तो बिहार के उच्च शिक्षण संस्थानों में स्नातक में इनरोलमेंट का प्रतिशत **92.88** था (इंजीनियरिंग और मेडिकल को छोड़ कर), जबकि स्नातकोत्तर में **6.59%** और पीएचडी में मात्र **0.16%**।

Table 4 Enrolments across levels in Bihar

Level	Enrolment	% Of Total Enrolment
Excluding Engineering and Medicine		
Ph.D	1,629	0.16%
Post Graduate	68,113	6.59%
Under Graduate	959,312	92.88%
PG Diploma	746	0.07%
Diploma	1,086	0.11%
Certificate	1,187	0.11%
	1,032,871	
Engineering		
Undergraduate	9,592	100.00%
Medicine		
Post Graduate	620	16.92%
Under Graduate	2754	75.16%
PG Diploma	290	7.91%
Grand Total	**1,046,127**	

Source: All India Survey of Higher Education, 2010-11

उपर्युक्त इन सभी मापदंडों पर विश्लेषण करने के बाद बिहार में उच्च शिक्षा के वास्तविक हालत का पता चलता है। हालत जर्जर से भी जर्जर है; इस बात में कोई दो राय नहीं। यहाँ की सरकार और नीति-निर्देशकों को जल्द इस पर सोचना चाहिए, नहीं तो आगे स्थिति और भी भयावह होगी।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

जब हम इन हालातों पर चर्चा करते हैं तो बिहार की अपनी एक संरचनात्मक समस्या भी नजर आती है। यहाँ की लगातार बढ़ती जनसंख्या भी यहाँ की शिक्षा-व्यवस्था की बदहाली के लिए जिम्मेवार है। हालाँकि, सरकार को इससे निदान पाने के लिए नए रास्ते ईजाद करने चाहिए। बढ़ती आबादी को एक मजबूत हथियार की तरह इस्तेमाल किया जाता है। दूसरी व्यवस्था यहाँ की कमजोर अर्थव्यवस्था भी है, जिसके कारण यहाँ के शिक्षण संस्थानों के इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूती प्रदान करने में दिक्कतें आती हैं। झारखंड के बिहार से अलग हो जाने पर बिहार की अर्थव्यवस्था काफी पिछड़ गई। इस अलगाव की वजह से तमाम तरह के खनिज और वन-संपदा, जो अर्थव्यवस्था का एक अहम साधन थे, वह झारखंड में चले गए। हालाँकि, अगर सरकार शिक्षा-व्यवस्था की बदहाली को खत्म करने के लिए जागरूक हो तो ये सारी समस्याएं हल की जा सकती हैं। अगर बिहार सरकार यहाँ के शिक्षण संस्थानों के इंफ्रास्ट्रक्चर में मजबूती लाना चाहे तो राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ऐसे कई संगठन और समूह हैं जो बिहार जैसे पिछड़े क्षेत्र की शिक्षा-व्यवस्था में व्यापक सुधार के लिए मदद के लिए आगे आ सकते हैं। इन समूहों और संस्थाओं की मदद से यहाँ व्यापक सुधार किया जा सकता है। पर, अब तक की बात करें तो यही पाया गया है कि शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए यहाँ की सरकारें कहीं से भी जागरूक और तत्पर नहीं हैं। इनमें राजनीतिक इच्छाशक्ति की घोर कमी दिखाई पड़ती है।

बिहार सरकार यहाँ के शिक्षण-संस्थानों में सुधार के लिए वैसे राज्यों से सलाह और मदद ले सकती है जहाँ उच्च शिक्षा के मद्देनजर संतोषजनक काम हो रहा है। नए और आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर, मसलन लैब, आधुनिक तकनीक, प्रयोगशालाएं, कंप्यूटर-सेंटर, आधुनिक लेक्चर हॉल, प्लेसमेंट सेल इत्यादि से यहाँ के उच्च शिक्षण संस्थानों को लैस करना होगा।

नए संस्थान खोलने के चुनावी घोषणाओं के बदले यहाँ की बने-बनाए संरचना में व्यापक सुधार लाना होगा। बिहार में कोई एक ऐसा राज्य विश्वविद्यालय तो हो जिसे बिहार सरकार उच्च शिक्षा के एक बेहतरीन मॉडल के रूप में देश और दुनिया के सामने पेश कर सके। पर, दुख की बात है कि यहाँ एक भी ऐसा राज्य स्तर का संस्थान नहीं है।

यहाँ के शिक्षण-संस्थानों में सबसे महत्वपूर्ण ज़रूरत है शिक्षकों की भारी कमी को दूर करने की। यह समस्या राज्य के लगभग सभी उच्च शिक्षण संस्थानों में बनी हुई है और काफी लंबे समय से बनी हुई है। देश में स्टुडेंट-टीचर अनुपात की बात करें तो **16:1** के मुकाबले बिहार

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

का स्टुडेंट-टीचर अनुपात **39:1**है और तो और यहाँ के विश्वविद्यालयों में यह आंकड़ा **47:1** तक का है। ये आंकड़े यहाँ की उच्च शिक्षा में बदहाली के ज्वलंत उदाहरण हैं। हम पहले चर्चा कर आए हैं कि कालांतर में बिहार में स्थापित नालंदा विश्वविद्यालय में स्टुडेंट-टीचर का यह आंकड़ा **10:1** का था। अर्थात, हर 10 विद्यार्थियों पर एक शिक्षक। हमें सरसरी निगाहों से इस अवसान को देखने की जरूरत है और अपनी कमियों को स्वीकार करने की भी। तभी यहाँ बेहतरी के लिए कुछ हो सकता है।

यहाँ के उच्च शिक्षण संस्थानों पर हावी राजनीतिक प्रतिद्वंदिता भी यहाँ की परिस्थितियों के लिए कम जिम्मेवार नहीं है। इस प्रतिद्वंदिता ने यहाँ अराजकता की स्थिति फैला रखी है। यहाँ के विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की नियुक्ति प्रायः राजनीति से प्रभावित होती है। इससे यह होता है कि भ्रष्ट, अनैतिक और बुद्धिहीन लोग इस पद पर आ जाते हैं और इस प्रकार संस्थानों में आदर्श और सुचारू व्यवस्था के लिए कोई मौलिक एवं रचनात्मक संरचना नहीं बन पाती।

संदर्भ सूची

1. प्रसाद, ओमप्रकाश. बिहार: एक ऐतिहासिक अध्ययन. राजकमल प्रकाशन(पटना). प्रथम संस्करण. २०१३. पृ.-३५८.
2. प्रसाद, ओमप्रकाश. बिहार: एक ऐतिहासिक अध्ययन. राजकमल प्रकाशन(पटना). प्रथम संस्करण. २०१३. पृ.-३५८.
3. वेबसाइट- यू.जी.सी https://www.ugc.ac.in/.
4. रिपोर्ट, एनआईआरएफ-2020 https://www.nirfindia.org/2020/Ranking2020.html.
5. रिपोर्ट- डेक्कन हेराल्ड. २३ सितम्बर २०१९ https://www.deccanherald.com/state/karnataka-districts/state-s-gross-enrolment-ratio-in-higher-edu-up-by-1-763290.html.
6. एक्सीलेंस इन हायर एजुकेशन- वर्ल्ड बैंक ग्रुप documents1.worldbank.org.

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.